# कोविड– 19 के दौरान एवं पश्चात् तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन हेतु सर्वेक्षण

——0——

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व की अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था को ठप्प कर दिया है। स्कूल, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में पठन–पाठन को प्रक्रिया पिछले छः माह से बाधित है तथा इस महामारी ने शिक्षण प्रणाली में तकनीक की उपयोगिता को आवश्यक कर दिया है। जहां एक तरफ छात्र ऑनलाईन माध्यम से पढ़ाई कर रहे हैं वहीं शिक्षकों को ऑनलाईन माध्यम से अध्यापन के नये–नये गुर सिख रहे हैं। शिक्षकों की तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति का ज्ञान अब आवश्यक हो गया है।

भारत के प्राचीन शिक्षण पद्धति में जिस तरह से मिश्रित शिक्षण प्रणाली हुआ करती थी। उसी प्रकार वर्तमान कोविड के दौर में और उसके पश्चात हमें मिश्रित शिक्षण व्यवस्था की बात करनी होगी। जिससे क्लास रूम शिक्षण तथा तकनीक आधारित शिक्षण शामिल होगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मूक विनियम 2016 में छात्रों की प्रत्येक सेमेस्टर में 20 प्रतिशत विषय ऑनलाईन माध्यम जैसे स्वयं से चुनाव करने का विकल्प दिया गया है। छात्र शेष विषयों को क्लास रूम के माध्यम से अध्ययन कर परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय ने पहल करते हुये इस विनियम को राज्य समन्वय समिति में पारित कराकर विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग में लागू किया है।

कोविड–19 के दौरान छात्र और अध्यापक का किस तरह से तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति से सामना हुआ, इसम क्या कठिनाई आयी तथा क्या भविष्य में तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति शिक्षा प्रणाली का हिस्सा हो सकेगी? इन्हीं सभी तथ्यों को जानने के लिये विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर साइंस एवं एप्लीकशन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. होता ने एक वृहद राज्य स्तरीय सर्वेक्षण गूगल फार्म के माध्यम से ऑनलाईन कराया है। जिसमें राज्य के 2850 शिक्षक और विद्यार्थी शामिल हुये।

सर्वेक्षण मुख्यतः इस बात पर आधारित था कि क्या तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति का ज्ञान शिक्षकों को पूर्व में था या क्या कोविड–19 के दौरान उन्होंने इसे सीखा तथा इसमें क्या कठिनाई आयी, किस प्रकार के कम्प्यूटिंग डिवाइस का उपयोग छात्र एवं शिक्षक कर रहे हैं।

## प्रश्नवार सर्वेक्षण के नतीजे निम्नानुसार हैः–

1. क्या तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन का ज्ञान आपको कोविड–19 के दौरान हुआ?
2. तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन हेतु आप मुख्यतः किस कम्प्यूटिंग डिवाइस का उपयोग करते हैं।

3. क्या भविष्य में कोविड–19 के पश्चात भी तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन प्रासंगिक होगी।
4. क्या कोविड–19 ने तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन को सीखने के लिये आपको एक अवसर प्रदान किया है।

आने वाले समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के अनुरूप से तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन की हमें बात करनी होगी तथा इसे अपनाना होगा। इसके साथ ही हमें इस हेतु अधोसंरचना विकसीत करने की आवश्यकता होगी। यदि ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें तो आज भी वहां इंटरनेट नहीं है तथा छात्रों के साथ कम्प्यूटिंग डिवाइस उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त इस हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण आवश्यक है। शिक्षकों की इस संदर्भ मे भूमिका महत्वपूर्ण होगी। कोविड के इस दौर में और उसके पश्चात भी शिक्षकों को तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति को अपनाना होगा और इसके लिये उन्हें तकनीक को सीखना होगा। चाहे वो किसी भी विषय का शिक्षक हो। उसे तकनीक आधारित शिक्षण पद्धति का न्यूनतम ज्ञान रखना होगा।

इसी को दृष्टिगत रखते हुये विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर साइंस विभाग ने लॉकडाउन के तुरंत पश्चात अप्रैल 16 एवं 19, 2020 को दो दिवसीय राज्य स्तरीय वेबीनार का आयोजन किया गया था। जिसमें राज्य के 600 से अधिक शिक्षक शामिल हुये। इसके पश्चात 10–22 अगस्त, 2020 को भारत सरकार के इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रायोजित फैकल्टी डवलपमेट प्रोग्राम का आयोजन किया गया तथा समानान्तर रूप में हैन्ड्स–ऑन विथ आई.सी.टी. टूल्स का आयोजन किया गया। विभाग शिक्षकों और छात्रों को तकनीक सहयोग उपलब्ध कराने हेतु शिक्षकों का एक पैनल भी तैयार किया है जो राज्य के शिक्षकों और विद्यार्थियों की तकनीक आधारित अध्ययन–अध्यापन में आने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु 30 सितंबर, 2020 तक तत्पर रहेगी तथा एक नियत तिथि एवं नियत समय में उन्हें ऑनलाईन माध्यम से समाधान मुहैया करा रही है।